ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

ओम् प्रतिष्ठ। यजु० 2/13

ओ३म् को अपने हृदय मन्दिर में बैठा लो।

Let us make God sit in the temple of our heart or We should sit down in god Almighty. We should make him our cover.

वर्ष 39, अंक 40 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 8 अगस्त, 2016 से रविवार 14 अगस्त, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

70वें भारतीय स्वाधीनता दिवस 15 अगस्त पर विशेष

आजादी की लड़ाई में आर्यों की भूमिका

सन् 1857 में भारत का प्रथम स्वतंत्रता युद्ध लड़ा गया और सन् 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ। इस क्रांति के प्रचार में तात्कालीन साधु संन्यासियों का बहुत बड़ा योगदान था। साधुओं के द्वारा नाना साहब पेशवा ने अपनी योजना का सन्देश सर्वत्र पहुंचाया था। तीर्थ यात्रा के मिशन से नाना साहब ने लगभग समस्त उत्तर भारत का भ्रमण कर तात्कालिक स्थिति का अवलोकन किया था। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी सन् 57 के स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लिया था ऐसा कुछ इतिहासकारों का मानना है।

स्वामी दयानन्द सन् 57 के अन्त तक कानपुर से इलाहाबाद और फर्रूखाबाद तक गंगा के किनारे विचरण करते रहे थे और इन वर्षों के बारे में अपने जीवन की घटनाओं को लिखते समय वे सर्वथा मौन रहा करते थे। यह बात 'हमारा राजस्थान' के पृष्ठ 275 से विदित होती है।

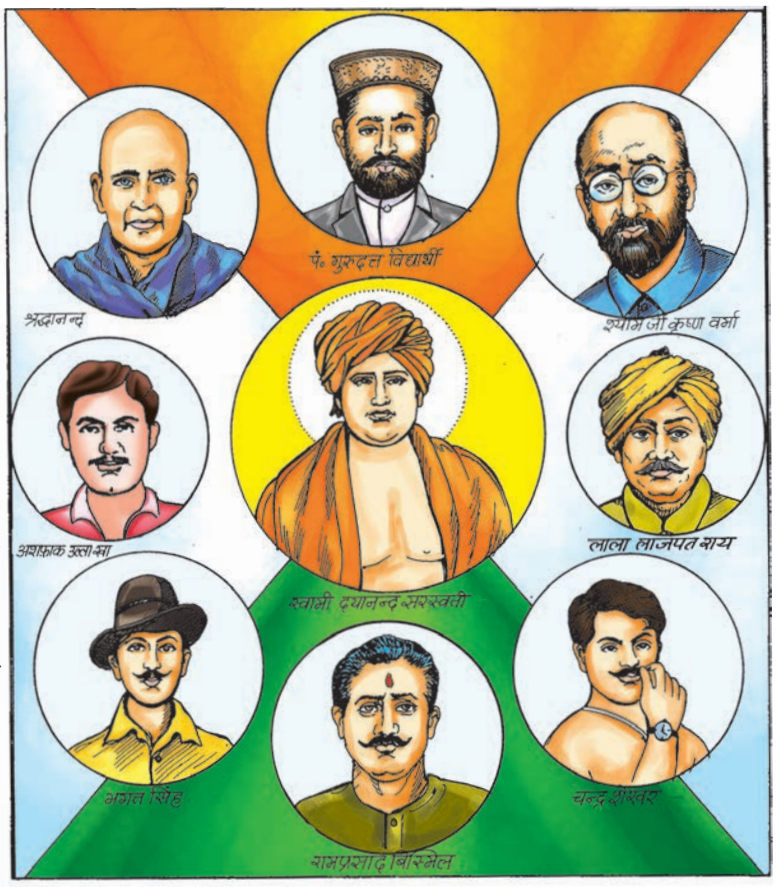

इस क्रांति के विफल हो जाने पर महर्षि दयानन्द ने तात्कालिक परिस्थिति के अनुसार अपना मार्ग बदलकर भाषण और लेख द्वारा

यह सर्वविदित एवं सर्वमान्य तथ्य है कि भारतीय स्वाधीनता संग्राम में आर्यसमाज की अतिमहत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रतिवर्ष स्वतन्त्रता दिवस एवं गणतन्त्र के अवसर पर ऐसे लेख प्रकाशित करके अपनी स्वयं की पीठ थपथपाना हमारा उद्देश्य नहीं है। बल्कि हमारा उद्देश्य आज की परिस्थितियों में भारतीय स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण बनाए रखनके की जिम्मेदारियों को याद रखना है। अगले पृष्ठ पर प्रकाशित सम्पादकीय का इस दृष्टिकोण से जोड़कर देखना चाहिए कि क्या आज हम अपनी रुढ़िवादिता से आजाद हो चुके हैं? दलित-सवर्ण, छुआछूत क्या वास्तव में समाप्त हो गया है? नहीं! आर्यसमाज का आन्दोलन अभी समाप्त नहीं हुआ अपितु हमें अपने पिछड़े भाईयों को अपने साथ खड़ा करना चाहिए, गुरुडमों, अन्ध विश्वास, रुढ़िवादिता से दो-दो हाथ करने चाहिए, ताकि यह देश और महान बन सके। इसी भावना के साथ यह लेख गुरुकुल झज्जर द्वारा प्रकाशित पुस्तक "बलिदान" की प्रस्तावना से लिया गया है।- सम्पादक

- शेष पृष्ठ 5 एवं 7 पर

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व लगभग सभी स्थानों में ऐसी स्थिति थी कि कॉंग्रेस के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं को यदि कहीं आश्रय, भोजन, निवास आदि मिलता था, तो वह किसी आर्य के घर में ही मिलता था। प्राय: दूसरे लोग इनसे इतने भयभीत थे कि उनमें इनको आश्रय देने का साहस ही न हो पाता था। हैदराबाद दक्षिण में निजाम सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह चलाकर जनता के हितों की रक्षा केवल आर्यों ने ही की है। वहां पर आर्य समाज के प्रति जनता की जितनी श्रद्धा है उतनी किसी अन्य के प्रति नहीं है।

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका का छब्बीसवाँ वार्षिक आर्य महासम्मेलन ऑरलैंडो सम्पन्न

युवाओं को आर्यसमाज के उचित स्थान देना सुखद भविष्य का संकेत - धर्मपाल आर्य

श्री विश्रुत आर्य जी - प्रधान एवं श्री भुवनेश खोसला जी - महामन्त्री मनोनीत

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका का छब्बीसवाँ वार्षिक आर्य महासम्मेलन जुलाई १४-१७, २०१६ को रैंनैसनस मैरियट एयरपोर्ट होटल, ऑरलैंडो फ्लोरिडा, अमेरिका में सम्पन्न हुआ जिसमें देश विदेश से आये आर्य जनो ने उत्साह से भाग लिया। आर्य समाज के सिद्धांतों को युवा पीढ़ी कैसे पहुंचाया जाये - यह इस सम्मेलन

- शेष समाचार पृष्ठ 5 पर

सम्मेलन के अवसर पर सम्बोधित करते आचार्य ज्ञानेश्वर जी, मंच पर उपस्थित स्वामी प्रणवानन्द जी एवं सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी। नव निर्वाचित प्रधान श्री विश्रुत आर्य जी एवं महामन्त्री श्री भुवनेश खेखला जी को वेदों का सैट पदान करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल जी एवं स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती एवं आर्यन्य आर्यजन

वेद-स्वाध्याय

संसार में सब मनुष्य समान हैं

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।
युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः।।-ऋ. 5/60/5
ऋषिः श्यावाश्व आत्रेयः।। देवता-मरुतो वाग्निश्च।। छन्दः निचृत्त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ-अज्येष्ठासः= जिनमें कोई बड़ा नहीं है और **अकनिष्ठासः**= जिनमें कोई छोटा नहीं है, ऐसे **ऐते**= ये सब **भ्रातरः**= परस्पर भाई **सौभगाय सं वावृधुः**= उत्तम ऐश्वर्य के लिए मिलकर उन्नति करने वाले हैं। **एषाम्**= इन सबका **युवा पिता**= सदा युवा पिता **स्वपा रुद्रः**= कल्याण कर्म करने वाला रुद्र परमेश्वर है और **मरुद्भ्यः**= इन मरुतों मनुष्यों के लिए **सुदिना**[1]= सुख देने वाली **सुदुघा**= उत्तम दूध देने वाली माता **पृश्निः**= प्रकृति है।

विनय-संसार-भर के सब मनुष्य (मरुत) परस्पर भाई-भाई हैं। मनुष्यमात्र एक ही माता-पिता के पुत्र हैं। संसार के किसी देश के एक कोने में रहने वाले मनुष्य के उसी तरह पिता ''रुद्र'' =परमेश्वर है और माता ''पृश्नि''=प्रकृति है जैसे किसी दूसरे कोने में रहने वाले के। मनुष्य होने की दृष्टि से इनमें न कोई बड़ा है और न छोटा है। काले-गोरे, हब्शी और सभ्य, पूँजीपति और श्रमी, पौर्वात्य और पाश्चात्य, ब्राह्मण और अछूत, हिन्दू और मुसलमान, जापानी या अमेरिकन, अंग्रेज या हिन्दुस्तानी, नागरिक व देहाती, सब-के-सब एक-समान परस्पर मनुष्य-भाई हैं। इनमें ऊँच-नीच मानना अज्ञान है। मनुष्य की दृष्टि से छोटा-बड़ा मानना अनुचित है। संसार-भर के मनुष्यों का ''मरुत् देवो'' की तरह उत्तम कल्याण के लिए मिलकर यत्न करना चाहिए, मिलकर संसार में मनुष्यता की उन्नति करनी चाहिए। जब मनुष्य-मनुष्य आपस में घृणा करते हैं, भिन्न-भिन्न देश के वासी होने से या भिन्न-भिन्न धर्मावलम्बी होने से लड़ते हैं, एक-दूसरे का तोपों-बन्दूकों और जहरीली गैसों से घात करते हैं, छोटे-बड़े का अभिमान कर एक-दूसरे का अत्याचार करते हैं, तब वे अपने एक-समान पिता-माता को भूल जाते हैं। क्या अंग्रेज भाइयों को पैदा करनेवाला प्रभु और है और भारतवासियों का और? वह एक ही रुद्र हम सब मरुतों का पिता है। वह कभी बुड्ढा न होने वाला, कभी न मरनेवाला पिता है। वह हम सबके लिए कल्याण कर्म करने वाला पिता है और हम सबकी माता यह प्रकृति है जो हमारे लिए उत्तम ऐश्वर्यों का दूध प्रदान कर रही है। तथा हमें सब सुख पहुँचा रही है। आओ! हम इन सब झूठे भेदभावों को भूलकर-काला-गोरा, पूँजीपति-श्रमी, छूत-अछूत, इस देशवासी और उस देशवासी, इन सब भेदों को भूलकर-हम सब मनुष्य, सब-के-सब मनुष्य, मिलकर मनुष्यमात्र के हित का ध्यान करें; एक-दूसरे के हित का ध्यान करें। अपने शोभन कर्म करने वाले अमर पिता के आशीर्वाद को पाते हुए और करुणामयी सुखदात्री माता द्वारा अपनी सब कामनाएँ पूरी करते हुए अपनी उन्नति का साधन करें और भाई-भाई की तरह एक-दूसरे की सहायता करते हुए मनुष्यता के उद्देश्य की पूर्त्ति में बढ़ते जाएँ।

1. सुदिन इति सुखनामसु पठितम्।

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

क्या आप इन्हें दलित ही बनाए रखना चाहते हैं?

लगता है एक बार फिर कुछ लोगों के द्वारा देश को तोड़ने का एक एजेंडा सा चलाया जा रहा है। इस बार इनका निशाना राम और कृष्ण की वह संतान हैं जिसे कभी दुर्भाग्यवश दलित कह दिया गया था। आज जिनके हक की बात कहकर कुछ न्यूज चैनल अपना एजेंडा चला रहे हैं। न्यूज एंकर पूछ रहे हैं, कि आखिर हिन्दुओं द्वारा दलितों पर हमला क्यों? उनके इस प्रश्न को दो बार पढ़िए और साजिश को समझिये! क्या दलित हिन्दू नहीं है? हम मानते हैं हमारी सबसे बड़ी कमजोरी जाति व्यवस्था है; पर ये जाति व्यवस्था क्या है? इसे भी समझना जरूरी है। जिस तरह किसी उपवन में भांति-भांति के पुष्प होते हैं। हर किसी की अपनी अलग सुगन्ध और रंग होता है किन्तु होते तो सभी पुष्प ही हैं। ठीक इसी तरह हमारे शास्त्रों में, हमारे ऋषि-मुनियों ने यद्यपि हमारे मनुष्य समाज को चार वर्णों में बांटा सिर को ब्राह्मण और पैरों को शूद्र कहा तो साथ में ये भी बताया कि प्रथम प्रणाम चरणों को करें। किन्तु समाज का एक वर्ग ऋषि-मुनियों की यह पवित्र वाणी भूल गया। आज हम पूछना चाहते हैं तमाम उन राजनेताओं और मीडिया के लोगों से कि दलितों से बड़ा हिंदू कौन है? अगर दलित हिन्दू नहीं है तो कौन हिन्दू बचा है। क्योंकि हमारे शास्त्रों में प्रणाम चरणों को किया गया है। शारीरिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो मस्तक सिरमौर है किन्तु जब पैर में काँटा लगता है तो सबसे पहले दर्द मस्तक को महसूस होता है जिसके लिए वह रोता है। ये जो वर्ण व्यवस्था थी। जो कभी विशेषता थी, उसे आज अपने निहित स्वार्थ और सत्ता के लालची लोगों द्वारा कमजोरी बना दिया गया। अगर इस देश-धर्म को अब भी मजबूत करना है तो हमें इन चरणों को सम्हाल कर रखना होगा। चरणों को प्रणाम करने की परम्परा को जीवित रखना होगा।

इस प्रसंग को गौर से देखें तो आज जो मीडिया घराने हर एक घटना को जातिवाद से जोड़कर दलित-दलित चिल्लाकर शोर मचा रहे हैं। क्या इसका लाभ देश और धर्म विरोधी संस्थाएं नहीं उठा रही होंगी? इससे बिल्कुल इंकार नहीं किया जा सकता! वर्ण व्यवस्था कभी समाज का सुन्दर अंग था परन्तु कुछ लोगों ने अपनी महत्वकांक्षा के लिए इस अंग पर खरोंच-खरोंच कर घाव बना दिया और परिणाम राजनेता और मीडिया समरसता के स्नेहलेप के बजाय अपने लाभ के लिए हर रोज इस घाव को हरा कर रही है। अब आप देखिये किस तरह यह लोग समाज को बाँटने का कार्य कर रहे हैं। कई रोज पहले एक मुस्लिम लेखक ''हन्नान अंसारी'' एक प्रसिद्ध न्यूज चैनल के ब्लॉग पेज पर लिखता है कि पशु और मनुष्य में यही विशेष अन्तर है कि पशु अपने विकास की बात नहीं सोच सकता, मनुष्य सोच सकता है और अपना विकास कर सकता है। हिन्दू धर्म ने दलित वर्ग को पशुओं से भी बदतर स्थिति में पहुँचा दिया है, यही कारण है कि वह अपनी स्थिति परिवर्तन के लिए पूरी तरह निर्णायक कोशिश नहीं कर पा रहा है, हां, पशुओं की तरह ही वह अच्छे चारे की खोज में तो लगा है लेकिन अपनी मानसिक गुलामी दूर करने के अपने महान उद्देश्य को गम्भीरता से नहीं ले पा रहा है। इसे पढ़कर लगा कि इनका उद्देश्य स्पष्ट दिखाई देता है कि दलित धर्मान्तरण इसी कारण। इनके द्वारा दलित समुदाय को हमेशा सपना दिखाया जाता है कि धर्मांतरण करने से सारे कष्ट दूर हो जायेंगे। अब इस बात को दलित समुदाय और धर्मपरिवर्तन की धमकी देने वालों को समझना होगा कि मान लो धर्म परिवर्तन कर यदि सारे कष्ट दूर होते तो आज मुस्लिमों के 56 देश हैं। कितने देशों के मुस्लिम शांति और सामाजिक समृद्धि, समरसता और सौहार्द का जीवन जी रहे हैं?

प्रथम बात, हम मानते हैं कि देश में अभी भी कुछ जगह जातिवाद और छुआ-छूत व्याप्त है और इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि सामाजिक भेदभाव की समस्या से कोई भी वर्ग समुदाय या देश अछूता नहीं है। यहाँ तक कि अमेरिका जैसे विकसित व शक्तिशाली देश में भी गोरे काले का भेदभाव हमसे कहीं ज्यादा है। मुस्लिम देशों में तो शिया-सुन्नी की आपसी जंग किसी से छिपी नहीं है पर पाकिस्तान जैसे कुछ देशों में तो अहमदिया जैसे गरीब तबके पर खुले आम अत्त्याचार होते हैं। दूसरी बात ऐसा नहीं कि दलित समुदाय के साथ हर जगह हर समय कुछ गलत ही हो रहा है। आज लोगों की सोच काफी हद तक बदली है और बदल भी रही है। क्या कोई शहरों में किसी हलवाई की जाति पूछकर समोसा खरीदता है? रेहड़ी वाले/दूकान वाले से उसका धर्म या जात पूछकर पानीपूरी या जलेबी खाता है? नहीं पूछता परन्तु यदि किसी रेहड़ी वाले से किसी ग्राहक का झगड़ा हो जाये और नौबत मारपीट तक आ जाये तो मीडिया से जुड़े लोग रेहड़ी वाले की जाति धर्म पूछकर, यदि दुर्भाग्य से किसी कारण वो रेहड़ी वाला मुस्लिम या दलित हुआ तो खबर जरूर बना देते हैं कि देखिये किस तरह एक दलित या अल्पसंख्यक पर हमला हुआ। जिसके लिए वह पूरे समाज और सिस्टम को दोषी ठहरा देते हैं। उसके लिए न्यूज स्टूडियो से इंसाफ की मांग उठाई जाती है। इसके बाद तथाकथित दलितों के देवता, गरीबों के रहनुमा, जिन्हें इसी काम के लिए देश-विदेश से पैसा मिल रहा है। ये धार्मिक व जातीय घृणा के सौदागर सड़कों पर ज्ञापन, धरना, प्रदर्शन, सत्याग्रह तथा महापड़ाव डालने की घोषणा कर धरना प्रदर्शन शुरू कर देते हैं और इस मामले को शुरू करने वाली मीडिया लाइव प्रसारण शुरू कर देती है। इनकी कोशिश यही रहती है कि जिसे ये दलित-दलित कहकर सांत्वना प्रकट करते हैं। वह केवल वही और उतना ही सोचे जितना यह लोग चाहते हैं और यह इन्होंने तय कर रखा है।

यह लोग हर एक मुद्दे पर ऐसा दिखाते हैं जैसे इनके हाथ में दलितों का भविष्य है, ये गलत मुद्दे तथा अधूरी जानकारियों के जरिए देशभर के दलितों को गुमराह कर सकते हैं, क्योंकि ये स्वघोषित महान अंबेडकरवादी हैं। कई बार तो लगता है जैसे नेताओं ने देश को खंड-खंड करने की साजिश का जिम्मा ले लिया हो? हम मानते हैं कि कुछ समस्या विराट रूप लेकर खड़ी हो जाती है। किन्तु क्या उसका निदान राजनीति और मीडिया ही कर सकती है? ऐसी धारणा को कौन बल दे रहा है यह प्रश्न भी प्रासंगिक है। हमें किसी प्रकार की राजनीति नहीं करनी है, जिसे करनी है वह करे, हम मानवता, शांति, सहिष्णुता, भाईचारे, समानता तथा स्वतंत्रता जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों के पक्षधर हैं और रहेंगे। किन्तु किन्ही वजहों से जब कुरीति छुआ-छूत के कारण या कहीं जातिगत मानसिकता को लेकर हमारे देश या धर्म को ठेस लगती है तो उसकी पीड़ा सीधी हमारे हृदय में होती है। हमने चाहे स्वामी दयानंद जी का समय रहा हो या स्वामी श्रद्धानंद जी का या वर्तमान में हमेशा सामाजिक समानता के लिए संघर्ष किया है। आज जिस तरह छोटी-छोटी बातों पर सनातन धर्म के मानने वालों को जातिगत भेदभाव कर अलग-अलग वर्गों में बांटा जा रहा है। जरा सोचें, जब सभी अलग हो जाएंगे तो कैसे बचेगा धर्म कैसे बचेगा देश? और आप किस पर राज करेंगे?

-सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

अब राजनीति नहीं न्याय करो !!

.....बुलंदशहर के पीड़ित परिवार ने कहा है कि यदि तीन महीनों में न्याय नहीं मिला तो वह आत्महत्या कर लेंगे, पर मुझे देश की न्याय प्रणाली और इस कांड में कुछ आरोपियों के मजहब देखकर नहीं लगता कि इतने दिनों में कोई फैसला आये। न्याय तो दूर की बात इतने दिनों तक चार्जशीट ही थानों में पड़ी सड़ती रहती है। जबकि इस मामले में पीड़ित परिवार ने खुद ही देख लिया कि किस तरह पुलिस ने घटना स्थल पर जाना उचित नहीं समझा और प्राथमिकी रिपोर्ट भी दर्ज करने में आनाकानी की। कुछ लोग सोचते होंगे ऐसे वीभत्स कांड के बाद थाने पहुंचते ही, पुलिस पीड़िता के आंसू पोंछती होगी और उसके सिर पर हाथ रखकर उसे ढांढस बंधाती होगी, तुरंत डाक्टर को बुलाती होगी और पुलिस अपराधी को तुरंत खोजने लग जाती होगी। अगर आप ऐसा सोचते हैं तो आप ने थाने देखे ही नहीं हैं।.....

अकेली नहीं थी, परिवार के साथ घर से निकली थी, कपड़े भी कम नहीं पहने थे, क्या यह कदम भी भूल में रख दिया जो इतनी बड़ी सजा मिली? शायद बुलंदशहर एन. एच. 91 पर दरिंदों का शिकार हुई वह मासूम बच्ची इस सभ्य कहे जाने वाले समाज से नम आँखे लिए इस प्रश्न का उत्तर जरूर टटोल रही होगी! अब हो सकता है, सरकारें इनकी अस्मत की कीमत लगाकर मुआवजा दे किन्तु उस पीड़ा का मुआवजा कौन देगा जो एक बंधक बाप ने उस समय महसूस की होगी जिस समय उसके परिवार को दरिन्दे नोच रहे थे? अब हो सके तो कानून की देवी की आँखों से वह काली पट्टी खोलकर इनके मासूम चेहरे जरूर दिखाए। उस तराजू में इनका वह दर्द रखकर न्याय हो जो इन्हें ताउम्र सहना है। यही समाज है यही देश के लोग हैं। हो सकता है इस लेख को कुछ लोग पढ़ने से कतराएं, पर यह एक चेतना का सामाजिक युद्ध है जिसमें हमें अपने आप से भी लड़ना है और बाहर भी लड़ना है। अभी तक बलात्कार का कारण महिलाओं के कम कपड़े बताने वालों को समझना होगा और स्वीकार करना होगा कि रेप कुछ लोगों की घटिया मानसिकता का परिचय है। अब सवाल यह है कि रेप जैसे घिनौने कृत्य हमारे समाज की संवेदनशीलता को बढ़ाते हैं या घटाते हैं? अगर घटाते हैं तो समाज और संवेदनशीलता को नुकसान करेंगे, अगर बढ़ाते हैं तो समाज का फायदा करेंगे।

सोचिये उस बाप पर अब क्या बीत रही होगी जिसके सामने बंधक बनाकर उसकी पत्नी और बेटी के साथ 3 घंटे तक यह घिनौना कृत्य किया गया! वह किस तरह सिसक-सिसककर मीडिया के सामने कह रहा था कि ''मुझे वह खौफनाक मंजर याद कर गुस्सा आता है मन करता है जहर खाकर मर जाऊं।'' आखिर किस तरह का दंश और खौफ लेकर वो पत्नी वह बेटी सारी उम्र जियेगी? घटना का पूरा विवरण लिखकर मैं कलम और कागज को शर्मसार नहीं करना चाहता। नहीं, लिखना चाहता कि उन दरिंदो ने घटना को किस तरह अंजाम दिया। जैसे भी दिया बस एक 13 साल की बच्ची और उसकी माँ को सारी उम्र का उनकी आत्मा को कचोटने वाला दर्द दिया जिसमें आंखों में आंसू तो होंगे किन्तु रुदन मूक होगा। यह मत सोचना कि अपराधी पकड़े जायेंगे तो दर्द का सिलसिला थम जायेगा। नहीं, अभी तो शुरुआत भर है मीडिया का कुछ हिस्सा पूरे कांड का श्रृंगार कर बेचेगा। राजनेता अपने बयानों से एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप कर उनके दर्द को कुरेदेंगे। यह भी इंकार नहीं किया जा सकता कि इनके दर्द में भी वोट तलाशें! इसके बाद जो बचेगा उसके साथ न्याय और कानून व्यवस्था कई सालों तक भद्दा मजाक करेगी। अब राजनेताओं और राज्य सरकार से उम्मीद करते हैं कि इस मामले में राजनीति करने के बजाय संवेदनशीलता दिखाएं न कि पूर्व की भांति यह बयान देकर पल्ला झाड़ ले कि ''लड़के हैं और लड़कों से गलती हो जाती है।'' क्योंकि अभी प्रदेश सरकार के एक मंत्री का बयान सुनकर लगा कि सरकारी सहानुभूति पीड़ित परिवार के बजाय अपराधियों के पाले में अभी से खड़ी हो गयी।

कुछ लोग बहुत ही तर्कवादी होते हैं। हो सकता है इस केस में भी तर्क प्रस्तुत करें। आज सुबह जब मैं आ रहा था तो मेट्रो के अन्दर एक श्रीमान कह रहे थे, ''कि गलती तो पीड़ित परिवार की भी है क्यों आधी रात को घर से बाहर निकले'' मुझे नहीं पता उनके तर्क का आधार क्या था! किन्तु यदि इस पक्ष के तर्कशास्त्री ज्यादा हों तो यह जरुर बताएं समाज और सरकार भी यह सुनिश्चित कराएँ कि महिलाएं ऐसा क्या पहने और किस समय घर से निकलें कि उनके सम्मान पर गिद्ध दृष्टि न पड़े? इसी तरह के तर्कशास्त्री अक्सर मैदान में आकर इन घिनौने कृत्यों को अनजाने में ही सही, पर बल तो दे जाते हैं जबकि अब जरूरत ये है कि समाज बिना किसी शर्म, संकोच के इतनी जोर से ही तर्क के बजाय प्रतिरोध करे, वरना आप के हल्के शब्द आप की शर्म, आपका संकोच आरोपी को सहमति प्रदान करने में देर नहीं लगायेंगे। नैतिकता की बड़ी-बड़ी बाते करने भर से कोई समाज चरित्रवान नहीं हो जाता है, समाज का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जहाँ आज महिलाएं सुरक्षित हैं, समाज में किसी भी वर्ग की लड़की इस तरह के अपराध से सुरक्षित नहीं है, उसका जीवन बिल्कुल ऐसे हो गया है जैसे वह अपराधी हो और इस मनुष्य समुदाय में अपनी सजा भुगतने आई हो और कह रही हो लो नोच लो मेरे शरीर को पर यह झूठी संवेदना का स्वांग बंद करो! दिसम्बर 2012 दामिनी के मामले में पूरा देश संवेदनशील होकर सड़कों पर उतरा था। उम्मीद थी राजनीति और न्याय पालिका भी इसमें जनभावनाओं का सम्मान करेगी। किन्तु बाद में न्याय पालिका ने तो थोड़ा न्याय प्रस्तुत किया किन्तु राजनीति एक अपराधी का धार्मिक आधार पर बन्दरबाँट करती नजर आई।

जिस तरह अब बुलंदशहर के पीड़ित परिवार ने कहा है कि यदि तीन महीनों में न्याय नहीं मिला तो वह आत्महत्या कर लेंगे, पर मुझे देश की न्याय प्रणाली और इस कांड में कुछ आरोपियों के मजहब देखकर नहीं लगता कि इतने दिनों में कोई फैसला आये। न्याय तो दूर की बात इतने दिनों तक चार्जशीट ही थानों में पड़ी सड़ती रहती है। जबकि इस मामले में पीड़ित परिवार ने खुद ही देख लिया कि किस तरह पुलिस ने घटना स्थल पर जाना उचित नहीं समझा और प्राथमिकी रिपोर्ट भी दर्ज करने में आनाकानी की। कुछ लोग सोचते होंगे ऐसे वीभत्स कांड के बाद थाने पहुंचते ही, पुलिस पीड़िता के आंसू पोंछती होगी और उसके सिर पर हाथ रखकर उसे ढांढस बंधाती होगी, तुरंत डाक्टर को बुलाती होगी और पुलिस अपराधी को तुरंत खोजने लग जाती होगी। अगर आप ऐसा सोचते हैं तो आप ने थाने देखे ही नहीं हैं। उल्टा कई बार तो शरीर से जख्मी पीड़िता को पुलिस के सवाल उसकी आत्मा को ज्यादा जख्मी कर देते है। इसके बाद पीड़ित परिवार कई-कई साल तक न्याय के नाम पर वकीलों के लिए कमाई का साधन बन जाता है। हर बार वही प्रश्न और वही उत्तर। बचाव पक्ष के वकीलों के केस को खींचने और दोषियों को बचाने के लिए अपने-अपने हथकण्डे चलाते हैं। उसके बचे-खुचे मान सम्मान को कागज के जहाज की तरह उड़ाया जाता है। मान लो इसके बाद यदि किसी तरह निचली अदालत में पीड़िता जीत भी गई तो फिर उससे ऊपर की अदालत फिर और ऊपर फिर राष्ट्रपति महोदय बैठे होते हैं। उपरोक्त सारी बातों पर यदि गौर करें तो स्त्रियों पर हो रहे अत्याचार का कारण केवल क्षणिक आवेग तो नहीं हो सकता। न ही केवल किसी अपराधिक मानसिकता के व्यक्ति की ही बात है। यदि कोई दोषी है तो पूरी कानून व्यवस्था, समाज और राजनेता हैं। तो जाहिर सी बात है एक बार क्यों न न्याय व सुरक्षा व्यवस्था और राजनीति को ही कटघरे में खड़ा कर इन प्रश्नों के उत्तर तलाशे जायें? **-राजीव चौधरी**

बोध कथा

सदा प्रसन्न रहो

मैं एक बार एबटाबाद में गया। एक सज्जन के यहां ठहरा। मेरा स्वभाव है बच्चों के साथ खेलना। उनके भी बच्चे थे। दिनभर मैं उनके साथ खेलता रहा। श्रीमान् जी दफ्तर गये हुए थे। दिन भर घर के अन्दर हंसी के ठहाके गूँजते रहे। परन्तु जैसे ही साढ़े चार बजे, वैसे ही एक बच्चे ने कहा-''अरे! पिताजी के आने का समय हो गया।''

दूसरे ने कहा-''समय क्या, सामने सड़क पर तो आ रहे हैं वे।''

जल्दी से एक बच्चा सोफे के नीचे जा छुपा, एक पलँग के नीचे घुस गया, एक मेज़ के नीचे चला गया। हर ओर सन्नाटा छा गया। श्रीमान जी बड़े रोब से आये। सामने वाली कुर्सी पर बैठ गये।

मैंने पूछा-''तुम्हारे बच्चे तुमसे इतना क्यों डरते हैं? वह देखो तुम्हें आता देखकर एक मेज़ के नीचे जा छुपा है। एक सोफे के पीछे दुबका पड़ा है। एक पलँग के नीचे घुस गया है।''

वे श्रीमान् जी मुस्करा भी नहीं सके; बोले-'' मैं घर में तनिक रोब से रहता हूँ। इससे घर का डिसिप्लिन ठीक रहता है।'' मैंने कहा-''तुम्हारा घर है या सैण्ट्रल जेल? यह क्या रोब जमा रखा है तुमने कि तुम आओ और बच्चों के प्राण सूख जायँ?अरे होना तो यह चाहिये कि तुम आओ और बच्चे चिपट जायँ, कोई सिर पर चढ़ जाय और कोई हाथ पकड़ ले, कोई कन्धे पर बैठे। ऐसा करने से तुम्हारा भी रक्त बढ़ेगा, बच्चों का भी।''

इसीलिए वेद कहता है-सदा प्रसन्न रहो! जो प्रसन्न नहीं रहता उसे गृहस्थ-आश्रम में प्रविष्ट होने का, उसमें रहने का कोई अधिकार नहीं।

साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य परिवारों में विवाह सम्बन्ध : एक सामूहिक कर्त्तव्य

आर्य समाज के सिद्धांतों व वैदिक जीवन मूल्यों का थोड़ा-सा ज्ञान रखने वाला प्रत्येक आर्य जानता है कि जातिवादी सोच के कारण यह देश लम्बी अवधि तक पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ रहा। स्वाधीन होने के बाद भी हमारे राजनेताओं के कारण जातिवाद का रोग बढ़ता गया। उनके लिए यह वोट बैंक का हथकंडा बनकर रह गया, आरक्षण इस जातिवाद का मोहक रूप बन कर आज मेरे देश के लिए भयंकर समस्या बनकर रह गया है। जब 70-70 प्रतिशित अंक लेने वाला युवक अयोग्य घोषित होकर बाहर कर दिया जाये और 35-40 प्रतिशत पाने वाले को अपने स्थान पर चयन होते देखता है तो कोई बताये कि वह इस अन्याय पूर्ण व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष का शंखनाद क्यों न करे? ऐसा करना देश व समाज को नष्ट करने वाला काम है। पूर्व काल में शुद्र व दलित कहलाने वालों साथ जितना अन्याय हुआ था, यह आरक्षण उससे म नहीं है। योग्यता व प्रतिभा का पहले भी अपमान होता था, आज भी होता है। पहले यह काम पुराणपंथी पोंगा पडित करते थे आज वोट पन्थी नेता यह पाप कर रहे हैं। जातिवाद का विष इतना फैल गया है कि आरक्षण पर चर्चा करना ही जातीय संघर्ष की सम्भावना पैदा कर देता है, ऐसे में इसे समाप्त करके प्रतिभाशाली युवकों के साथ न्याय करने की बात या आर्थिक दृष्टि से पिछड़े या दलितों को आरक्षण की बात करना ही कितना भयंकर होगा यह सरलता से समझा जा सकता है।

मैं जातिवाद या आरक्षण से उत्पन्न अनर्थों की चर्चा करना नहीं चाहता, मुझे जातिवाद को सैद्धान्तिक रूप से बिल्कुल न मानने वाले आर्यों को एक बात यह समझानी है कि अगर हम आर्यों के जीवन-व्यवहार से जातिवाद का विष न निकला, हम इससे ऊपर उठकर ऋषि-मान्य, वेद वर्णित व्यवस्था के अनुसार अपने पुत्र-पुत्रियों के विवाह संस्कार करने-कराने की हिम्मत न दिखा सके तो ऋषि का जीवन भर का तप-त्याग व्यर्थ सा हो जायेगा। ये माना कि सत्य और उसके लिए किया गया तप कभी नष्ट नहीं होता, लेकिन हमारी गिनती उस भाग्यहीन पीढ़ी के रूप में होगी जो ऋषि के तप त्याग और अमर बलिदान से कोई लाभ न उठा सकी।

सुधी आर्यों, क्या हमें वेद व अपने वैदिक ऋषियों के वचनों पर विश्वास है? सच्चे अर्थों में आर्य तो वे ही हैं जो नित्य संध या, स्वाध्याय व यज्ञ आदि करके अपने जीवन को आर्य बनाते हुए तथा वैदिक वर्ण व्यवस्था के अनुसार अपने पुत्र-पुत्रियों का

विवाह संस्कार करके अपनी आने वाली सन्तान को भी वैदिक धर्मी बनाने के लिए प्रयास कर रहे हैं। मैंने जातिवाद से ऊपर उठकर स्व-सन्तान का विवाह करने का संकल्पित अपने विद्वानों को देखकर संकल्प लिया था कि मैं भी जाति-पांति तोड़कर वैदिक धर्मी परिवारों से स्व-सन्तान का विवाह करूंगा। मैं तो इस दिशा में लगा ही हूं, लेकिन अभी मेरी भेंट ऐसे ही एक पुराने मित्र से हुई जो इसके लिए लम्बे समय से प्रयत्नशील हैं। चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि जाति प्रथा से ऊपर उठकर गुण, कर्म, स्वभाव के मेल से आर्य परिवारों में विवाह करना आज आकाश से तारे तोड़ लाने जितना कठिन हो गया है। ऋषि का कहना तो यहां तक था कि अगर घर में सेवक भी रखना हो तो जहां तक सम्भव हो, वहां तक आर्य विचारों का ही रखें, तथा आर्य सेवक भी सेवा के लिए आर्य परिवार को ही प्राथमिकता दे। इधर हम हैं कि परिवार के स्थायी सदस्य के लिए भी आर्य विचारों-संस्कारों की चिन्ता नहीं करते।

हमारे अभिन्न मित्र ने बताया कि वे अपने पुत्र-पुत्रियों का विवाह संस्कार वैदिक परिवारों में करने के लिए लम्बे समय से अपने आर्य मित्रों से सहयोग मांग रहे हैं, लेकिन कोई सार्थक सहयोग मिलना अभी शेष है। कारण ये है कि लोक-परम्परा के अनुसार पुत्रीका पिता ही योग्य घर-वर ढूंढने निकलता है, ऐसे में पुत्र का पिता संस्कारी पुत्रवधू के लिए प्रयास करता है। तो लोग सोचते है। कि कोई गड़बड़ है, ऐसे में उसे अच्छी दृष्टि से भी नहीं देखते। उन्होंने बड़ी सुन्दर बात कही कि पुत्री के पिता के लिए अच्छा घर-वर ढूंढना जितना आवश्यक है, उससे कहीं अधिक आवश्यक है पुत्र के पिता के लिए एक सुशील संस्कारित पुत्र वधु की खोज करना/ कारण पुत्रवधु उसके परिवार की सदस्य बनेगी, उसके परिवार का सुखद भविष्य, बुढापे की सेवा एवं सन्तति-निर्माण जैसा महत्त्वपूर्ण काम उस पुत्रवधु के अनुसार ही होना है। जिसके कुल क निर्माण एवं सम्पूर्ण भविष्य ही जिस पर निर्भरी हो उस वधु की खोज इस सम्बन्ध में ऋषि लिखते हैं.'ब्रह्मचर्य, विद्या के ग्रहण पूर्वक विवाह के सुधार से ही सब बातों का सुधार और बिगड़ने से बिगाड़ हो जाता है।' अन्यत्र लिखा है -'सो विवाह वर्णानुक्रम से करें और वर्ण व्यवस्था भी गुण-कर्म, स्वभाव के अनुसार होनी चाहिए।' हमें इस ऋषि आदेश पर ध्यान देने की महती आवश्यकता है।

करना दूरदृष्टि है न कि दुर्बलता। आर्यों को यह बात समझनी चाहिए और आर्यों का आर्य परिवारों में विवाह संस्कार करने कराने में पूरा सहयोग करना चाहिए। उन्होंने कन्या गुरुकुल की आचार्याओं से भी सहयोग मांगा, प्रति उत्तर की प्रतीक्षा में हैं। अगर हमें कोई ऐसा विज्ञापन दीखता है या कोई व्यक्तिगत रूप से ऐसा कहता है तो हम आर्यों को अवश्य सहयोग करना चाहिए, ऐसा करना हमारा आर्योचित कर्त्तव्य है।

यह सच है कि आर्य समाज युवक-युवतियों का सामूहिक परिचय सम्मेलन करवा कर इस दिशा में अच्छा काम कर रहा है, लेकिन किन्ही कारणों से उनमें भाग लेना कुछ आर्यों को रुचिकर नहीं लगता। ऐसे में पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित विज्ञापन व परस्पर की चर्चाओं से भी इस दिशा में बहुत काम हो सकता है। कन्या गुरुकुलों की आचार्या बहनें भी इस पर अवश्य विचार करें, वैदिक काल में विवाह सम्बन्धों में उनकी भूमिका रहती थी ये सब जानते हैं। आज उस वैदिक परम्परा को पुनर्जीवित करने में कुछ समस्याएं तो आ सकती हैं, लेकिन परिणाम बहुत अच्छे प्रकट होंगे। एक अत्यंत उपयोगी, करणीय कर्त्तव्य की ओर सुधी आर्यों का ध्यान आकर्षित करने की भावना से जो लिखा है उस पर आर्योचित रीति से विचार करते हुए सभी आर्यजन गुण-कर्म-स्वभाव के मेल से विवाह करने के इच्छुक आर्यों का उत्साह पूर्वक समर्थन व सहयोग करें। ऐसा करना हम सबका सामूहिक कर्त्तव्य है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा विगत कुछ वर्षों से 15 आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलनों का आयोजन भारत के विभिन्न जिलों में कर रही है जिसके सार्थक परिणाम भी सामने आये हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस सन्दर्भ में अपने पोर्टल को भी सक्रिय किया हुआ है जिसमें कोई भी आर्य युवक-युवती अपना सम्पूर्ण वैवाहिक विवरण रजिस्टर करा सकती है। - ***रामनिवास 'गुणग्राहक'***

आर्यसमाज सन्देश विहार में संगीत विद्यालय का शुभारम्भ

– प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री विजय भूषण जी निर्देशन में गत दिनों आर्यसमाज सन्देश विहार, दिल्ली में वैदिक संगीत विद्यालय का शुभारम्भ किया गया। सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने इस संगीत विद्यालय का उद्घाटन किया। उद्घाटन के उपरान्त अपना उद्बोधन देते हुए श्री विनय आर्य जी ने कहा कि संगीत आर्यसमाज के लिए वर्तमान समय बहुत आवश्यक है। प्रत्येक आर्य को संगीत सीखना चाहिए और समय-समय पर अभ्यास करना। उन्होंने कहा कि ऐसे विद्यालय और भी आर्यसमाजों में खुलें सभा का ऐसा प्रयास होगा। इस अवसर पर उ.पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के मन्त्री श्री जोगेन्द्र खट्टर, श्रीमती अनीता आनन्द जी, श्री रजनीश आर्य एवं अन्य अनेक आर्यजन उपस्थित थे। आर्यसमाज के प्रधान श्री विशाल आर्य जी ने सभी उपस्थित आर्यजनों का कार्यक्रम में पधारने पर आभार व्यक्त किया तथा समाज मे मन्त्री श्री दुर्गेश आर्य जी ने मंच संचालन किया। - ***रजनीश आर्य***

संगीत विद्यालय में बालक-बालिकाओं विभिन्न वाद्ययन्त्रों का प्रशिक्षण देते श्री विजय भूषण जी। संगीत विद्यालय के उद्घाटन के उपरान्त उद्बोधन देते दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, साथ में हैं संगीतज्ञ श्री विजय भूषण जी।

प्रथम पृष्ठ का शेष

सर्वविध क्रांति प्रारम्भ की। महर्षि दयानन्द ही वह पहले भारतीय हैं जिन्होंने अंग्रेजों के साम्राज्य में सर्वप्रथम स्वदेशी राज्य की मांग की थी। वे अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं – ''कोई कितना ही करे जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि, उत्तम होता है अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात् शून्य, प्रजा पर पिता- माता के समान कृपा, न्याय एवं दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायी नहीं है।''

महर्षि दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थ आर्याभिविनय में लिखा है''अन्य देशवासी राजा हमारे देश में न हों, हम लोग पराधीन कभी न रहें।'' इससे पता लगता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की क्या भावना थी। राष्ट्र के संगठन के लिए जाति-पांति के झंझटों को मिटाकर एक धर्म, एक भाषा और एक समान वेश भूषा तथा खान-पान का प्रचार किया। आज हिन्दी भारत राष्ट्र की राजभाषा बन चुकी है। किन्तु पूर्व में जब हिन्दी का कोई विशेष प्रचार न था, उस समय महर्षि दयानन्द ने हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने की घोषणा की, स्वयं गुजराती तथा संस्कृत के उद्भट विद्वान होते हुए भी उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों की हिन्दी में रचना की थी। जबकि बंगाल के बंकिमचन्द्र तथा महाराष्ट्र के विष्णु शास्त्री चिपलूणकर आदि प्रसिद्ध लेखकों ने अपनी रचनाएं प्रान्तीय भाषाओं में ही लिखी थीं।

दीर्घकालीन दासता के कारण भारतवासी अपने प्राचीन गौरव को भूल गये थे। इसलिए महर्षि दयानन्द ने उनके प्राचीन गौरव और वैभव का वास्तविक दर्शन करवाया और सप्रमाण सिद्ध कर दिया कि हम किसी के दास नहीं अपितु गुरु हैं। इस प्रकार भारत भूमि को इस योग्य बनाया कि जिसमें स्वराज्य पादप विकसित पुष्पित और फलाग्रही हो सकें।

सन् 1857 के पश्चात् की क्रांति के जन्मदाता महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनके शिष्य पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा जो क्रांतिकारियों के गुरु थे। प्रसिद्ध क्रांतिकारी विनायक दामोदर सावरकर, लाला हरदयाल, भाई परमानन्द, सेनापति बापट, मदनलाल धींगड़ा इत्यादि शिष्यों ने स्वाधीनता आन्दोलन में कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। इंग्लैण्ड में भारत के लिए जितनी क्रांति हुई वह श्याम जी कृष्ण वर्मा के ''इण्डिया हाउस'' से ही हुई। अमेरिका में जो क्रांति भारत की स्वाधीनता के लिए हुई, वह देवता स्वरूप भाई परमानन्द के सदुद्योग का फल है। पंजाब में श्री जयचन्द्र विद्यालंकार क्रांतिकारियों के गुरु रहे हैं। आप डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर में इतिहास और राजनीति के प्रोफेसर थे। सरदार भगत सिंह और उनके क्रांतिकारी साथी इनसे राजनीति की शिक्षा ग्रहण करते थे।

सरदार भगत सिंह तो जन्म से ही आर्य समाजी थे। इनके दादा जी सरदार अर्जुन सिंह विशुद्ध आर्य समाजी थे और इनके पिता श्री किशन सिंह भी आर्य समाजी थे।

सांडर्स को मारकर भगत सिंह आदि पहले तो लाहौर के डी.ए.वी. कॉलेज में ठहरे, फिर योजनाबद्ध तरीके से कलकत्ता जाकर आर्य समाज में शरण ली और आते समय आर्य समाज के चपरासी तुलसीराम को अपनी थाली यह कहकर दे आये थे कि 'कोई देशभक्त आये तो उसको इसी में भोजन करवाना।' दिल्ली में भगत सिंह, वीर अर्जुन कार्यालय में स्वामी श्रद्धानन्द और पंडित इन्द्र विद्यावाचस्पति के पास ठहरे थे क्योंकि उस समय ऐसे लोगों को ठहराने का साहस केवल आर्य समाज के सदस्यों में ही था।

गांधी जी जब अफ्रीका से लौटकर भारत आये तब उनको ठहराने का किसी में साहस न था। लाला मुन्शीराम (स्वनाम धन्य नेता स्वामी श्रद्धानन्द) ने ही उनको गुरुकुल कांगड़ी में ठहराया था और गांधी जी को महात्मा गांधी की उपाधि से सुशोभित भी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ही किया था।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व लगभग सभी स्थानों में ऐसी स्थिति थी कि काँग्रेस के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं को यदि कहीं आश्रय,

– शेष पृष्ठ 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

युवाओं को आर्यसमाज ....

का मुख्य विषय था। सम्मेलन का कार्यक्रम प्रतिदिन योग, ध्यान, एवं वैदिक यज्ञ द्वारा प्रारम्भ होता। इस सम्मेलन में विद्वान, प्रचारक, आर्यनेता और आर्यजन भारत, इंग्लैंड, कनाडा और अमेरिका के विभिन प्रान्तों से पधारे। ४ दिन का कार्यकम एक प्रोफेशनल कांफ्रेंस की तरह सम्पन्न हुआ। सभी प्रवचन और व्याख्यान अंग्रेजी या हिंदी भाषा में संपन्न हुए। हर सत्र में शंका समाधान भी यथोचित होता रहा।

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका की नयी कार्य कारिणी की घोषणा भी इसी सम्मेलन में की गयी। नयी कार्यकारिणी इस प्रकार है- सर्वश्री विश्रुत आर्य – प्रधान, श्री भुवनेश खोसला – महामंत्री, श्री वेदब्रत इतवारु – सह मंत्री, श्री जतिन्दर अब्बी – कोषाध्यक्ष, श्रीमती सटी गुरदियाल – सह-कोषाध्यक्ष, श्री विजय भल्ला – पूर्व प्रधान। आर्यपथिक वानप्रस्थ श्री गिरीश खोसला, ट्रस्टी रूप में, कार्यकारिणी के पूर्णकालिक सदस्य हैं। सम्मेलन में कई परिवार तो पहली बार पधारे और प्रभावित होकर उन्होंने सभा और आर्य समाज से जुड़ने का संकल्प लिया जो कि सम्मेलन की सफलता का द्योतक है। इस अवसर पर सम्मेलन पत्रिका भी प्रकाशित की गयी जिसमें मुख्य रूप से वक्ताओं के प्रवचनों के सारांश संकलित किये गए।

युवाओं के लिए अलग से सत्र लगाए गए थे और कुछ सत्र संयुक्त भी थे। युवाओं के अधिकतम सत्र प्रश्नोत्तर रूप में थे जिससे कि उनकी जिज्ञासाओं का समाधान हो सके। औपचारिक सत्रों के इतर विभिन्न छोटे छोटे समूहों में लोगों ने आर्य समाज की वर्तमान दिशा, दशा और आर्य समाज की विचारधारा को देश विदेश में पहुंचाने के उपायों पर चर्चा की जो कि अत्यधिक उत्साहवर्धक रही। कई नए युवाओं ने आर्य समाज के कार्यों के लिए सभा से जुड़ने का संकल्प लिया। सम्मेलन बड़े ही उत्साह पूर्वक वातावरण में, आर्य समाज के कार्यों में और गति लाने के संकल्प के साथ समाप्त हुआ। इसके बाद सभी विद्वानों ने अमेरिका के विभिन्न बड़े शहरों की और प्रस्थान किया जिससे कि वह वहाँ की आर्य समाजों में प्रचार कर सकें।

भारत से सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, श्रीमती वीणा आर्या, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी , डॉ. सोमदेव जी एवं अन्य आर्य बन्धुओं ने भाग लिया।

आर्य महासम्मेलन के अवसर पर आयोजित युवा सम्मेलन में उपस्थित युवाओं एवं बच्चों के साथ सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वीणा आर्याजी । सभा प्रधान जी आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के नव निर्वाचित पदाधिकारियों के साथ

आर्य महासम्मेलन के अवसर पर मंव पर अपनी प्रस्तुति देते आर्यसमाज के युवा एवं बाल कार्यकर्ता। इस अवसर ध्यानपूर्वक गतिविधियों एवं कार्यक्रमों को देखते सम्मेलन में उपस्थित आर्यजन।

Glimpses of the SamaVeda

- Priyavrata Das

Continue from last issue :-

Our Praises to Deities surely proceed to You

O Infinite Lord, surely, You are beyond our comprehension. We, therefore, praise many deities each symbolizing an understandable form of your manifestation.Our oblation to each ultimately proceeds to you as glory, O sole Sovereign of creation. Our unending enquiry into the bounties of Nature is the search of you, the truth-incarnate that sustains the Universe. Our tribute ot motheland is an invocation to you for you firmly hold the mother-earth. When we sing divine hymns relating to the vital principles of creation, these are songs for your acceptance. O the Sun of the suns, we adore the sun in the sky as a mark of your worship because you are the driving force of the sun.

The verse says, "Whatever we offer in repeated and plentiful oblations in recognition of Nature's bounties is assuredly an offering to you.'The seers of the Upanishads had proclaimed their dedication thus: 'To Him knowing whom everything is known, everything is attained; O Adorable Lord, may our adoration of the knowable deities, be the quest for You, the Unknowable Supreme."

यच्चिद्धि शश्वता तना देवंदेवं यजामहे।
त्वे इद्धूयते हविः।। (Sv.1618)

Yac cidd hi sasvata tana devam-devam yajamahe.
tve idd huyate havih..

The Speech Divine

"May the divine speech, the source of communication of the faculties, mental and spirttual, the purifier and bestower of knowledge, the recompenser of worship, be the fountain-head of inspiration and accomplishment for all our organized and benevolent acts."

"May our Lord, the divine preceptor, never deprive us of the gracious gift of speech. May He the giver of supreme wisdom, shower on us, the delectable speech. May that speech save us and also our sons and grandsons from all kinds of violence and envy."

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसुः।। (Sv.189)

Pavaka nah sarasvati vajebhir vajinivati.
yajnam vastu dhiyavasuh..

त्वष्टा नो दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः।
पुत्रैर्भ्रातृभरदितिर्नु पातु नो दुष्टरं त्रामणं वचः।। (Sv.299)

Tvasta no daivyam vacah parjanyo brahmanaspatih.
putrair bhratrbhir aditir nu patu no dustaram tramanam vacah..

Fame through Good Deeds

"May my fame spread in regions extending from earth to heaven. May I be a recipient of reputation from men of learning and men of power. May I be renowned amongst men of power. May I be recognized amongst the people of wealth. May I be never depried of my glory. May I have good name amongst the members of assembly and may I be known for my eloquence."

"May I acclaim the valorous deeds of the resplendent soul, the lower self, which he has achieved; he has removed the cloud of blind and dark impulses; and cast out the evil thoughts; he has broken a way for the torrents of wisdom through obstacles."

यशो मा द्यावापृथिवी यशो मेन्द्रबृहस्पती।
यशो भगस्य विन्दतु यशो मा प्रतिमुच्यताम्।
यशस्व्या३स्याः संसदोऽहं प्रवदिता स्याम्।। (Sv.611)

yaso ma dyava prthivi yaso mendra brhaspati.
yaso bhagasya vindatu yaso ma pratimucyatam.yasasvyasyah sam sadoahm pravadita syam..

इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्रवोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री।
अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत् पर्वतानाम्।। (Sv.612)

Indrasya nu viryani pravocam yani cakara prathamani vajri.
ahann ahim anvapas tatarda pra vaksana abhinat parvatanam..

To be Conti....

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ - 10

गतांक से आगे....

स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने संस्कृत का अभ्यास करने के लिए संस्कृत वाक्य प्रबोध पुस्तक की रचना की है आगे के कुछ अध्यायों का अभ्यास हम इस पुस्तक से ही करेंगे।

संस्कृत वाक्य प्रबोध: मैंने इस संस्कृत वाक्य प्रबोध पुस्तक को बनाना आवश्यक इसलिये समझा है कि शिक्षा को पढ़ के कुछ-कुछ संस्कृत भाषण का आना विद्यार्थियों को उत्साह का कारण है । जब वे व्याकरण के सन्धिविषयादि पुस्तकों को पढ़ लेंगे तो उनको स्वत: ही संस्कृत बोलने का बोध हो जायेगा, परन्तु यह जो संस्कृत बोलने का अभ्यास प्रथम किया जाता है, वह भी आगे-आगे संस्कृत पढ़ने में बहुत सहायता करेगा । जो कोई व्याकरणादि ग्रन्थ पढ़े बिना भी संस्कृत बोलने में उत्साह करते हैं वे भी इसको पढ़कर व्यवहार सम्बन्धी संस्कृत भाषा को बोल और दूसरे को सुनके भी कुछ-कुछ समझ सकेंगे । जब बाल्यावस्था से संस्कृत के बोलने का अभ्यास होगा तो उसको आगे-आगे संस्कृत बोलने का अभ्यास अधिक-अधिक होता जायेगा और जब बालक भी आपस में संस्कृत भाषण करेंगे तो उनको देखकर जवान वृद्ध मनुष्य भी संस्कृत बोलने में रुचि अवश्य करेंगे । जहां कहीं संस्कृत के नहीं जानने वाले मनुष्यों के सामने दूसरे को अपना गुप्त अभिप्राय समझाना चाहें तो संस्कृत भाषण काम आता है ।

जब इसके पढ़ाने वाले विद्यार्थियों को ग्रन्थस्थ वाक्यों को पढ़ावें उस समय दूसरे वैसे ही नवीन वाक्य बनाकर सुनाते जावें, जिससे पढ़ने वालों की बुद्धि बाहर के वाक्यों में भी फैल जाये और पढ़ने वाले भी एक वाक्य को पढ़ के उसके सदृश अन्य वाक्यों की रचना भी करें जिससे बहुत शीघ्र बोध हो जाये, परन्तु वाक्य बोलने में स्पष्ट अक्षर, शुद्धोच्चारण, सार्थकता, देश और काल वस्तु के अनुकूल जो पद जहाँ बोलना उचित हो, वहीं बोलना और दूसरे के वाक्यों पर ध्यान देकर सुनके समझना। प्रसन्नमुख, धैर्य, निरभिमान और गम्भीरतादि गुणों को धारण करके क्रोध, चपलता, अभिमान और तुच्छादि दोषों से दूर रहकर अपने व किसी के सत्य वाक्य का खण्डन और अपने अथवा किसी के असत्य का मण्डन कभी न करें और सर्वदा सत्य को ग्रहण करते रहें ।

इस ग्रन्थ में संस्कृतवाक्य प्रथम और उसके सामने भाषार्थ इसलिये लिखा है कि पढ़ने वालों को सुगमता हो और संस्कृत की भाषा और भाषा को संस्कृत भी यथायोग्य बना सकें ।

- दयानन्द सरस्वती, काशी, फा.शु. 11 (1936 वि.)

हमने इन प्रकरणों को संधि विच्छेद, वर्ण विभाग आदि करने का प्रयास किया है इस पुस्तक का प्रथम प्रकरण गुरु शिष्य वार्ता लाप से संबन्धित है -

गुरु शिष्य वार्तालापप्रकरणम् (1)

संस्कृत	हिन्दी
भो शिष्य उत्तिष्ठ प्रात:कालो जातः ।	हे शिष्य ! उठ, सवेरा हो गया है ।
उत्तिष्ठामि ।	उठता हूँ ।
अन्ये सर्वे विद्यार्थिन उत्थिता न वा ?	और सब विद्यार्थी उठे या नहीं ?
अधुना तु नोत्थिताः खलु।	अभी तो नहीं उठे हैं ।
तान् अपि सर्वान् उत्थापय	उन सब को भी उठा दे ।
सर्व उत्थापिताः।	सब उठा दिये ।
सम्प्रति अस्माभिः किं कर्त्तव्यम् ?	इस समय हमको क्या करना चाहिये ?
आवश्यकं शौचादिकं कृत्वा सन्ध्यावन्दनम्।	आवश्यक शरीर शुद्धि करके सन्ध्योपासना।
आवश्यकं कार्यं कृत्वा सन्ध्योपासिताऽत:	आवश्यक कर्म करके सन्ध्योपासन कर लिया।
परम् अस्माभिः किं करणीयम् ?	इसके आगे हमको क्या करना चाहिये ?
अग्निहोत्रं विधाय पठत।	अग्निहोत्र करके पढ़ो ।
पूर्वं किम् पठनीयम ?	पहले क्या पढ़ना चाहिये ?
वर्णोच्चारण शिक्षाम् अधीध्वम्।	वर्णोच्चारणशिक्षा को पढ़ो।
पश्चात् किम् अध्येतव्यम् ?	पीछे क्या पढ़ना चाहिये ?
किंचित् संस्कृतोक्तिबोधः क्रियताम्।	कुछ संस्कृत बोलने का ज्ञान किया जाय।
पुनः किम् अभ्यसनीयम् ?	फिर किसका अभ्यास करना चाहिये ?
यथायोग्य व्यवहार अनुष्ठानाय प्रयुतध्वम्।	यथोचित व्यवहार करने के लिये प्रयत्न करो।
कुतोऽनुचितव्यवहार कर्तुर्विद्यैव न जायते।	क्योंकि उल्टे व्यवहार करनेहारे को विद्या ही नहीं होती।
को विद्वान् भवितुम् अर्हति ?	कौन मनुष्य विद्वान् होने के योग्य होता है ?
यः सदाचारी प्राज्ञः पुरुषार्थी भवेत्।	जो सत्याचरणशील, बुद्धिमान, पुरुषार्थी हो ।
कीदृशात् आचार्यात् अधीत्य पण्डितो भवितुं शक्नोति ?	कैसे आचार्य से पढ़ के पण्डित हो सकता है ?
अनूचानतः ।	पूर्ण विद्वान वक्ता से ।
अथ किम् अध्यापयिष्यते भवता ?	अब आप इसके अनन्तर हमको क्या पढ़ाइयेगा ?
अष्टाध्यायी महाभाष्यम्।	अष्टाध्यायी और महाभाष्य।
किमनेन पठितेन भविष्यति ?	इसके पढ़ने से क्या होगा ?
शब्दार्थ सम्बन्ध विज्ञानम्।	शब्द अर्थ और सम्बन्धों का यथार्थबोध।
पुनः क्रमेण किं किम् अध्येतव्यम् ?	फिर क्रम से क्या-क्या पढ़ना चाहिये ?
शिक्षा कल्प निघण्टु निरुक्त छन्दोज्योतिषाणि वेदानाम् अङ्गानि मीमांसा वैशेषिक न्याययोग सांख्य वेदान्तानि उपाङ्गानि आयुर्धनुर्गान्धर्वार्थान् उपवेदान	शिक्षा, कल्प, निघण्टु, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष वेदों के अंग, मीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग सांख्य और वेदान्त उपांग,आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद और अर्थवेद उपवेद।
ऐतरेय शतपथसाम गोपथ ब्राह्मणान्यधीत्य ऋग्यजुस्सामाथ्ऽथर्ववेदान् पठत।	ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ ब्राह्मण ग्रन्थों को पढ़के ऋग्वेद, यनुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद को पढ़ो।
एतत्सर्वं विदित्वा किं कार्य्यम् ?	इन सबको जान के फिर क्या करना चाहिये ?
धर्मजिज्ञासाथ्ऽनुष्ठाने एतेषाम् एवाथ्ऽध्यापनं च।	धर्म के जानने की इच्छा तथा उसका अनुष्ठान और इन्हीं को सर्वदा पढ़ाना।

क्रमश:

- आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज दरियागंज, नई दिल्ली

प्रधान	: श्री सत्येन्द्र कुमार गुप्ता
मंत्री	: श्री वेद प्रकाश कात्याल
कोषाध्यक्ष	: श्री गौरव पुरी

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, वाराणसी

प्रधान	: श्री अजीत कुमार आर्य
मंत्री	: श्री प्रमोद आर्य
कोषाध्यक्ष	: श्री नरेन्द्र कुमार आर्य

70वां स्वतंत्रता दिवस समारोह

वेद प्रचार मंडल उत्तरी-पश्चिम दिल्ली एवं आर्य समाज रानी बाग के तत्त्वावधान में दिनाकं 15 अगस्त 2016 प्रात: 10.30 बजे 70वां स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाया जा रहा है। ध्वजारोण डॉ. आनन्द कुमार वरिष्ठ अधिकारी भारतीय पुलिस सेवा एवं अतिथि श्री सतेन्द्र जैन (ग्रह एवं स्वास्थ्य मंत्री दिल्ली सरकार) व श्री देवराज अरोड़ा (निगम पार्षद) जी होंगे। *-जोगेन्दर खट्टर, महामंत्री*

श्रावणी/वेद प्रचार पर्व

आर्य समाज पंखा रोड 'सी' ब्लाक जनकपुरी, दिनांक 18 से 25 अगस्त 2016 के मध्य श्रावणी/वेद प्रचार पर्व का आयोजन कर रहा है। इस अवसर पर डॉ. धर्मवीर व स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी के प्रवचन एवं श्री कुलदीप आर्य के भजनोपदेश किए जाऐंगे व आर्यवीर व आर्य वीरांगना सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन व श्री कृष्ण जन्माष्टमी समारोह आयोजित किये जाएंगे।

-शिव कुमार मदान, प्रधान

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली
श्रावणी एवं वेद प्रचार समारोह

18 अगस्त से 25 अगस्त, 2016
प्रवचन : स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक
भजनोपदेशक : श्रीमती गरिमा शास्त्री
भजन-प्रवचन : सायं 7 से 9 बजे
भाषण प्रतियोगिता : 25 अगस्त, 2016
विषय:आदर्श महापुरुष योगिराज श्रीकृष्ण
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

- दयानन्द यादव,मन्त्री

आर्यसमाज जंगपुरा भोगल का
श्रावणी पर्व

26 से 28 अगस्त, 2016
प्रवचन : आचार्य श्यामलाल जी
भजनोपदेशक : श्रीमती सुदेश आर्या
भजन-प्रवचन : सायं 7:30 से 9:30 बजे

11 कुण्डिय यज्ञ एवं समापन

28 अगस्त : प्रात: 8 से 12:30 बजे
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर धर्मलाभ प्राप्त करें। - *ए.सी.धीर, मन्त्री*

आर्यसमाज कालकाजी का वेद प्रचार सप्ताह 22 से 28 अगस्त, 2016

वेद कथा : आचार्य धर्मवीर जी भजनोपदेशक : पं. सत्यपाल पथिक जी
भजन-प्रवचन : प्रतिदिन सायं 6:30 से 8:30 बजे पूर्णाहुति एवं आर्य सम्मेलन - 28 अगस्त, 2016 प्रात: 7:30 से 1 बजे - *सुधीर मदान,मन्त्री*

आर्य विद्या परिषद दिल्ली के अन्तर्गत आगामी प्रतियोगिताएं

प्रतियोगिता	दिनांक एवं समय	स्थान - विद्यालय का नाम
भाषण प्रतियोगिता	24 अगस्त 2016 प्रात: 9 बजे	लालीबाई बाल विद्यालय, राम बाग, नई दिल्ली-110007
समूह गान	30 अगस्त, 2016 प्रात: 9 बजे	बिड़ला आर्य कन्या सी. सै. स्कूल, कमला नगर दिल्ली-7

आप सबसे निवेदन है कि आप अपने एवं अपने विद्यालयों के बच्चों को इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करें। अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नं. 9810061263, 9868233795 पर सम्पर्क करें। - *सुरेन्द्र कुमार रैली, प्रस्तौता*

प्रेरक प्रसंग

जब तक आर्यसमाज का मन्दिर नहीं बनता

यह घटना उत्तर प्रदेश के प्रयाग नगर की है। पूज्य पण्डित गंगा प्रसादजी उपाध्याय अपने स्वगृह दया-निवास (जिसमें कला प्रेस था) का निर्माण करवा रहे थे। घर पूर्णता की ओर बढ़ रहा था। एक दिन उपाध्याय जी निर्माण-कार्य का निरीक्षण कर रहे थे। अनायास ही मन में यह विचार आया कि मेरा घर तो बन रहा है, मेरे आर्य समाज का मन्दिर नहीं है। यह बड़े दु:ख की बात है।

इस विचार के आते ही भवन-निर्माण का कार्य वहीं रुकवा दिया। अब आर्य समाज के भवन-निर्माण के उपाय खोजने लगे। ईश्वर की कृपा से उपाध्याय जी का पुरुषार्थ तथा धर्मभाव रंग लाया। मन्दिर का भवन भी बन गया। उसी मन्दिर में आगे 'कलादेवी हाल' निर्मित हुआ।

मैं यह घटना अपनी स्मृति के आधार पर लिख रहा हूँ। घटना का मूल स्वरूप यही है। वर्णन में भेद हो सकता है। यह घटना अपने एक लेख में किसी प्रसंग में स्वयं उपाध्याय जी ने उर्दू रिफार्मर साप्ताहिक में दी थी। उपाध्याय जी के जीवन की ऐसी छोटी-छोटी, अत्यन्त प्रेरणाप्रद घटनाएँ उनके जीवन-चरित्र 'व्यक्ति से व्यक्तित्व' में दी हैं, परन्तु आर्यसमा जी स्वाध्याय से अब कोसों दूर भागते हैं। स्वाध्याय धर्म का एक खम्बा है। इसके बिना धार्मिक जीवन है ही क्या?

साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो (5,10,20 किलो की पैकिंग)
अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, दूरभाष - 23360150, 9540040339

पृष्ठ 5 का शेष

भोजन, निवास आदि मिलता था, तो वह किसी आर्य के घर में ही मिलता था। प्राय: दूसरे लोग इनसे इतने भयभीत थे कि उनमें इनको आश्रय देने का साहस ही न हो पाता था। हैदराबाद दक्षिण में निजाम सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह चलाकर जनता के हितों की रक्षा केवल आर्यों ने ही की है। वहां पर आर्य समाज के प्रति जनता की जितनी श्रद्धा है उतनी किसी अन्य के प्रति नहीं है।

आर्यसमाज सुन्दर विहार में
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं श्रावणी

18 से 25 अगस्त, 2016
गायत्री यज्ञ ब्रह्मा: आचार्य लक्ष्मणकुमार
प्रवचन : आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
11 कुंडी यज्ञ एवं पूर्णाहुति : 25 अगस्त
स्थान : सामुदाय भवन, सुन्दर विहार
प्रवचन : डॉ. महेश विद्यालंकार

- कंवरभान क्षेत्रपाल, प्रधान

आर्यसमाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली
श्रावणी एवं वेद प्रचार कार्यक्रम

आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का श्रावणी पर्व 22 से 25 अगस्त तक आयोजित किया जाएगा। ऋग्वेदीय यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, भजन श्री अंकित शास्त्री एवं प्रवचन डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री के होंगे। *- नरेन्द्र वलेचा, मन्त्री*

आर्यसमाज सूरजमल विहार का
वेद प्रचार सप्ताह व श्रावणी पर्व

19 से 25 अगस्त, 2016
ऋग्वेदीय यज्ञ ब्रह्मा: श्री उदयभानु शास्त्री
वेद कथा : श्री छविकृष्ण शास्त्री
भजन : श्रीमती सुदेश आर्या
पूर्णाहुति एवं जन्माष्टमी: 25 अगस्त
प्रात: 9 बजे से 12:30 बजे
विशिष्ट अतिथि : श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली सभा *- मन्त्री*

आजादी की लड़ाई में ....

अमृतसर (पंजाब) में काँग्रेस का अधिवेशन करवाने का साहस अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी में ही था। उस समय की स्थिति को देखकर किसी भी काँग्रेसी में इतना साहस न था जो सम्मुख आता और काँग्रेस का अधिवेशन करवा सकता। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता थे उनकी देशभक्ति किसी से तिरोहित नहीं।

राजस्थान केसरी कुंवर प्रताप सिंह वारहट, पं. राम प्रसाद बिस्मिल और उनके साथी पक्के आर्य समाज थे। इनके सम्बन्ध में श्री मन्मथनाथ गुप्त ने जो स्वयं क्रांतिकारी थे ने साप्ताहिक हिन्दुस्तान के 13 जुलाई 1858 के अंक में लिखा था। इसी प्रकार के और भी अनेक उदाहरण मिलते हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि देश की स्वतन्त्रता की लड़ाई में आर्य समाज ने बढ़-चढ़कर हिस्सा ही नहीं लिया अपितु नेतृत्व भी किया है। स्वदेशी प्रचार, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, अछूतोद्धार, शुद्धि प्रचार, गोरक्षा, शिक्षा-प्रसार, स्त्री शिक्षा, विधवा उद्धार आदि सभी श्रेष्ठ कार्यों में आर्य समाज अग्रणी रहा है। देश धर्म के लिये जो भी आन्दोलन और सत्याग्रह हुए हैं उनमें आर्य जन सबसे आगे रहे हैं। यदि कोई पक्षपाती इतिहास लेखक इस ध्रुव सत्य को अतीत के निबिड़ान्धकार में छिपाने का प्रयत्न करे तो दूसरी बात है किन्तु कोई भी निष्पक्ष सहृदय व्यक्ति इससे इन्कार नहीं कर सकता कि देश की स्वतन्त्रता और सर्वविध कांन्ति में महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायी आर्य, सर्वदा अग्रणी रहे हैं।

- गुरुकुल झज्जर द्वारा प्रकाशित पुस्तक "बलिदान" की भूमिका से साभार

शोक समाचार

श्री सुरेश नैयर का निधन

आर्य समाज पंजाबी बाग विस्तार के कार्यकारी प्रधान श्री सुरेश नैय्यर जी का 68 वर्ष की आयु में दिनांक 21 जुलाई 2016 को अचानक हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। दिनांक 24 जुलाई 2016 को हुई श्रद्धांजलि सभा में प्रो. महेश विद्यालंकार, डॉ. देव शर्मा, श्री रवि चड्ढ़ा प्रधान पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, श्री हीरा लाल चावला अध्यक्ष वेद संस्थान, श्री कपूर, श्री राजेन्द्र दुर्गा, श्री के. सी. बजाज आदि ने अपने-अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

श्री ओम प्रकाश वर्मा का निधन

आर्य समाज आर्यपुरा, दिल्ली के प्रधान श्री ओम प्रकाश वर्मा जी का दिनांक 30 जुलाई, 2016 को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्तियज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 11 अगस्त, 2016 को सामुदायिक भवन 39 ब्लाक, शक्ति नगर में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ आस-पास की अनेक आर्यसमाज के सदस्यों एवं पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री ओम प्रकाश गुप्ता का निधन

आर्यसमाज घोण्डा के पूर्व प्रधान एवं अन्य अनेक पदों पर अपनी सेवाएं देने वाले श्री ओम प्रकाश गुप्ता जी का गत दिनों निधन हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 8 अगस्त से रविवार 14 अगस्त, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 11 अगस्त/ 12 अगस्त, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 10 अगस्त, 2016

मैं आर्यसमाजी कैसे बना? - रुबेल सिंह आर्यवीर

पं. ज्योति स्वरूप जी के भजनों से मिली प्रेरणा

मैं रुवेल सिंह आर्यवीर भजनोपदेशक ग्राम रानीपुर, पो. मुगल वाली जिला-यमुना नगर, हरियाणा का रहने वाला हूं। इस समय मेरी आयु 72 वर्ष है। 14-15 वर्ष की आयु में ही कुसंगति में पड़ने के कारण बीड़ी-सिगरेट, शराब जैसे दुर्व्यसनों का आदी हो गया था। हमारे घर के पास ही कपाल मोचन का मेला गुरु नानक जी के जन्म दिवस पर हर वर्ष लगता है। उसी मेले में (वर्ष 1970) स्वामी भीष्म जी के श्रेष्ठ शिष्य पं. ज्योति जगाधरी के एक बहुत बड़े सेठ ने मेले में ही बृहद् यज्ञ कराया। मैं घण्टों तक उस यज्ञ में बैठा रहा। मुझ पर इस पवित्र यज्ञ का बड़ा प्रभाव पड़ा। सारे मेले में यज्ञ सुगन्धि फैल रही थी। बहुत ही उत्तम वातावरण बना हुआ था। यज्ञोपरांत पं. ज्योति स्वरूप

जी के बहुत ही मधुर और प्रभावशाली भजन हुए जिनको सुनकर मैं प्रसन्नता में झूमने लगा। मैंने सोचा मुझे भी आर्य समाजी बनकर ऐसा ही भजनोपदेशक बनना चाहिए। मैंने पं. जी से प्रार्थना की 'पंडित जी क्या मैं भी आप जैसा बन सकता हूं?'

पं. जी ने कहा 'क्यों नहीं, आप मेरे से भी बढ़िया बन सकते हैं।' मैंने तुरन्त अपने गांव रानीपुर में आर्य समाज का उत्सव उन्हीं पंडित जी के द्वारा कराया और उन्हीं से यज्ञोपवीत धारण किया और बाद में प्रतिज्ञा की कि जीवन में शराब सिगरेट आदि कभी प्रयोग नहीं करूंगा। कुछ समय बाद 1978 में मुझे एक महात्मा स्वामी अरण्य मुनि जी महाराज जोकि उच्च कोटि के वेद के विद्वान थे, मिले उनसे मेरा बहुत प्रेम हो गया और उन्होंने भी चाय पीने की आदत सदा के लिये छुड़वा दी। मेरे एक घनिष्ठ मित्र श्री लक्ष्मण जी ने मुझे आर्य समाज के भजन सुनाने व बनाने के लिये कहा। मैंने तुरन्त उनकी बात स्वीकार करते हुए, आर्य समाज के भजन सुनाने और स्वयं उनकी रचना करनी प्रारम्भ कर दी। परमेश्वर ने मुझे वैदिक भजन सुनाने की प्रेरणा दी और उन्हीं की

प्रतिष्ठा में,

कृपा से ही आज मैं अपने उद्देश्य में सफल हो पाया हूं। भजनोपदेशक के रूप में 36 वर्षों से लगातार वैदिकधर्म का प्रचार कर रहा हूं। ईश कृपा से, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, आन्ध्रा तथा उत्तराखण्ड आदि में अनेक बार जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। 3 सितम्बर 1984 से दैनिक यज्ञ करने का व्रत तो लिया ही है परन्तु विद्वान मित्रों का भी इसमें बहुत बड़ा तथा महर्षि दयानन्द की कृपा समझता हूं।

भजनोपदेशक, यमुना नगर (हरियाणा)

आपके साथ ऐसा क्या हुआ कि आप आर्यसमाज की ओर आकर्षित हुए। यदि आपने भी किसी की प्रेरणा/विचारों से प्रभावित होकर आर्यसमाज में प्रवेश करके वैदिक संस्कृति को अपनाया है तो यह कॉलम आपके लिए ही है। आप अपनी घटना/ प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखकर भेजिए। आपके विवरण को युवाओं की प्रेरणा एवं जानकारी के लिए आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा। हमारा पता है- 'आर्य सन्देश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' या aryasabha@yahoo.com द्वारा ईमेल से भी भेज सकते हैं। -*सम्पादक*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक

रविवार 21 अगस्त, 2016 सायं 3:00 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अत्यावश्यक अन्तरंग सभा बैठक 21 अगस्त, 2016 को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली में सायं 3 बजे आयोजित की गई है। सभा के समस्त अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों एवं विशेष आमन्त्रित सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें।

धर्मपाल आर्य (प्रधान) **विनय आर्य** (महामन्त्री)

स्वास्थ्य चर्चा

फोड़े-फुंसियों का उपचार

बारिश के मौसम में शरीर पर फोड़े फुंसियां निकलना आम बात है। इस बार इन्हीं फोड़े फुंसियों के घरेलू व कारगर उपायों की चर्चा करते हैं।

1. सिंदूर, कत्था, कमिला, कपूर 10-10 ग्राम पीसकर घी में मिलाकर नीम की डण्डी से घोंट कर लगायें।
2. आम के अचार का तेल 50 ग्राम में गंधक आमलासार 10 ग्राम पीसकर मिलाकर सिर की फुंसियों पर लगाएं।
3. पीपल का पत्ता घी में चिपड़ कर थोड़ा गर्म कर फोड़े पर बांधने से मवाद खत्म हो जाता है या फोड़ा पककर फूट जाता है।
4. काला जीरा पानी में पीस कर लगाएं।
5. ब्रह्मदण्डी 10 ग्राम, काली मिर्च 7, पानी में पीसकर छान कर प्रात: सायं पीयें। इससे फोड़े फुंसियां, खुजली व दाद ठीक हो जाती है।
6. अलसी को पानी में पीसकर फोड़े पर लेप कर दें फोड़ा फूट जाएगा।
7. फोड़ा फूट जाने पर नीम के 25 ग्राम पत्ते पानी में पीसकर टिक्की बना 50 ग्राम तिल में पकाएं। जल जाने पर तेल निथार लें। फिर इसमें मोम 6 ग्राम डालकर घोटें मरहम बना लें। दिन में 2 बार लगाएं। हर प्रकार का जख्म भर जाएगा।
8. माजून चोबचीनी 7 ग्राम पानी से रात को सोते समय लें।
9. मरहम सफेदा कासगरी या कपूर प्रात: सायं लगाएं।
10. साखिधासव 4-4 चम्मच पानी मिलाकर भोजन के बाद दोनों समय लें। इससे पीप बहना ठीक हो जाता है।

साभार : चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद

वैद्य खेम भाई द्वारा रचित ''चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद'' पुस्तक से साभार। यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली -110001 के पते पर भेज सकते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह